शोध प्रस्ताव

विषय: स्वामी दयानन्द की वैदिक शिक्षा दृष्टि और समकालीन ब्रिटिश शिक्षा नीति: एक तुलनात्मक अध्ययन (1824-1883)

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में उन्नीसवीं सदी एक महत्वपूर्ण कालखंड रहा है। इस काल में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें मजबूत हो चुकी थीं और उनकी शिक्षा नीति भारतीय समाज को प्रभावित कर रही थी। इसी काल में भारतीय समाज सुधार आंदोलन के अग्रणी व्यक्तित्वों में से एक स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) का उदय हुआ। उन्होंने न केवल धार्मिक और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टंकारा गाँव में 1824 में हुआ था। उन्होंने वैदिक धर्म और संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए आर्य समाज की स्थापना की और 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। उनकी शिक्षा दृष्टि पूर्णतः वैदिक परंपरा पर आधारित थी, जहाँ वेदों को समस्त ज्ञान का आधार माना जाता था। दूसरी ओर, ब्रिटिश शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य भारत में पश्चिमी शिक्षा प्रणाली स्थापित करना था। लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति (1835) के बाद भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार तेजी से हुआ। इस नीति का उद्देश्य भारतीयों को अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराना था ताकि वे ब्रिटिश प्रशासन में सहायक की भूमिका निभा सकें।

स्वामी दयानन्द की वैदिक शिक्षा दृष्टि और ब्रिटिश शिक्षा नीति के बीच मौलिक अंतर थे। जहाँ दयानन्द जी वैदिक ज्ञान, संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति को प्राथमिकता देते थे, वहीं ब्रिटिश नीति अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी ज्ञान पर केंद्रित थी। दयानन्द जी का मानना था कि वेद समस्त ज्ञान के भंडार हैं और उनमें आधुनिक विज्ञान के सभी सिद्धांत मौजूद हैं।

स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में शिक्षा के महत्व पर विस्तार से चर्चा की है। उन्होंने शिक्षा को व्यक्तित्व विकास का साधन माना और इसे केवल व्यावसायिक तैयारी तक सीमित नहीं रखा। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और आत्मा की शुद्धता होना चाहिए।

दयानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की वकालत की जहाँ छात्र गुरु के साथ रहकर न केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करते थे बल्कि व्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक कुशलताएं भी सीखते थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा के महत्व पर भी जोर दिया और महिलाओं के लिए वैदिक शिक्षा की व्यवस्था की बात कही।

ब्रिटिश शिक्षा नीति का मुख्य आधार था कि भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपराओं में कोई वैज्ञानिक सामग्री नहीं है। इसलिए भारतीयों को आधुनिक बनाने के लिए अंग्रेजी शिक्षा आवश्यक है। इस नीति के तहत कॉलेज और स्कूल स्थापित किए गए जहाँ अंग्रेजी माध्यम से पश्चिमी विषयों की शिक्षा दी जाने लगी।

यह तुलनात्मक अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दो विपरीत शिक्षा दर्शनों के बीच संघर्ष को दिखाता है। एक ओर स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण था जो भारतीय ज्ञान परंपरा की श्रेष्ठता में विश्वास रखता था, दूसरी ओर ब्रिटिश दृष्टिकोण था जो पश्चिमी ज्ञान की श्रेष्ठता का दावा करता था।

प्रस्तुत शोध कार्य में इन दोनों शिक्षा दृष्टिकोणों का विस्तृत और तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। इस अध्ययन से न केवल उन्नीसवीं सदी की शिक्षा नीतियों की समझ मिलेगी बल्कि यह भी पता चलेगा कि इन नीतियों का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा।

स्वामी दयानन्द के शिक्षा संबंधी विचार उनके सामाजिक और धार्मिक सुधार कार्यक्रम का अभिन्न अंग थे। उन्होंने शिक्षा को समाज परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना। उनका मानना था कि जब तक भारतीय अपनी मूल ज्ञान परंपरा से जुड़े नहीं रहेंगे, तब तक वे सच्चे अर्थों में स्वतंत्र नहीं हो सकते।

इस शोध कार्य में 1824 से 1883 तक का कालखंड चुना गया है क्योंकि यह स्वामी दयानन्द के जीवनकाल से मेल खाता है। इस दौरान ब्रिटिश शिक्षा नीति में भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिनका विश्लेषण आवश्यक है।

शोध अंतराल:

स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके शिक्षा संबंधी विचारों पर पर्याप्त शोध कार्य हुआ है। इसी प्रकार ब्रिटिश शिक्षा नीति पर भी विस्तृत अध्ययन उपलब्ध हैं। परंतु दोनों के बीच तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में अभी भी काफी कार्य की आवश्यकता है।

अधिकांश इतिहासकारों ने स्वामी दयानन्द के धार्मिक और सामाजिक सुधार कार्यों पर अधिक ध्यान दिया है, जबकि उनके शिक्षा दर्शन पर अपेक्षाकृत कम काम हुआ है। विशेष रूप से उनकी शिक्षा दृष्टि और समकालीन ब्रिटिश शिक्षा नीति के बीच तुलनात्मक विश्लेषण का अभाव दिखाई देता है।

ब्रिटिश शिक्षा नीति पर हुए अध्ययनों में मुख्यतः इसके प्रशासनिक और राजनीतिक पहलुओं पर जोर दिया गया है। परंतु इस नीति के सांस्कृतिक और वैचारिक आधार का गहरा विश्लेषण कम ही मिलता है। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द की वैदिक शिक्षा दृष्टि के दार्शनिक आधार और इसकी व्यावहारिकता के मूल्यांकन की आवश्यकता है।

अधिकांश शोध कार्यों में स्वामी दयानन्द और ब्रिटिश शिक्षा नीति को अलग-अलग संदर्भों में देखा गया है। दोनों के बीच वैचारिक संघर्ष, प्रभाव-प्रतिप्रभाव और उनके परिणामों का समग्र अध्ययन अभी भी अधूरा है। यह शोध कार्य इस अंतराल को भरने का प्रयास करेगा। इसमें न केवल दोनों शिक्षा दर्शनों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा बल्कि यह भी दिखाया जाएगा कि इन दोनों दृष्टिकोणों का भारतीय शिक्षा व्यवस्था के भावी विकास पर क्या प्रभाव पड़ा।

इस शोध से यह भी पता चलेगा कि स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि कहाँ तक व्यावहारिक थी और ब्रिटिश शिक्षा नीति के विकल्प के रूप में इसकी क्या संभावनाएं थीं। साथ ही यह भी स्पष्ट होगा कि समकालीन बौद्धिक वातावरण में इन दोनों दृष्टिकोणों की क्या स्थिति थी।

साहित्य की समीक्षा:

स्वामी दयानन्द सरस्वती और ब्रिटिश शिक्षा नीति पर प्रकाशित साहित्य की समीक्षा करने पर पता चलता है कि इस विषय पर पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है, परंतु तुलनात्मक दृष्टिकोण से इसका विश्लेषण कम ही हुआ है।

डॉ. हर बिलास शारदा की पुस्तक "दयानन्द सरस्वती: हिज लाइफ एंड वर्क" (1946) में स्वामी दयानन्द के जीवन और कार्यों का विस्तृत विवरण है। इस पुस्तक में उनके शिक्षा संबंधी विचारों का भी उल्लेख है परंतु इसमें समकालीन ब्रिटिश शिक्षा नीति के संदर्भ में तुलनात्मक विश्लेषण नहीं है।

प्रो. जे.टी.एफ. जॉर्डी का "दयानन्द सरस्वती: हिज लाइफ एंड आइडियाज" (1978) एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसमें स्वामी दयानन्द के विचारों का विश्लेषण है। इसमें उनकी शिक्षा दृष्टि पर भी चर्चा है परंतु यह मुख्यतः उनके धार्मिक विचारों के संदर्भ में है।

डॉ. के.सी. यादव की "आर्य समाज एंड एजुकेशन" (1987) में आर्य समाज की शिक्षा नीति का विस्तृत विवरण है। इसमें स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि और डी.ए.वी. कॉलेजों की स्थापना के बारे में जानकारी है। परंतु इसमें भी ब्रिटिश शिक्षा नीति के साथ तुलना नहीं है।

प्रो. डेविड कॉप का "ब्रिटिश ओरिएंटलिज्म एंड द बंगाल रेनेसांस" (1969) में ब्रिटिश काल में पूर्वी और पश्चिमी शिक्षा के विवाद पर प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक ब्रिटिश शिक्षा नीति की पृष्ठभूमि समझने में सहायक है।

ब्रूस मैकेली की "एजुकेशन एंड दी ब्रिटिश राज" (1992) में ब्रिटिश काल की शिक्षा नीति का व्यापक विश्लेषण है। इसमें मैकाले की शिक्षा नीति से लेकर वुड्स डिस्पैच तक की शिक्षा नीतियों की समीक्षा है।

डॉ. अपर्णा बसु का "एसेज ऑन हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन" (1982) भारतीय शिक्षा के इतिहास पर एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें ब्रिटिश काल की शिक्षा नीति और उसके प्रभावों का विश्लेषण है।

प्रो. सुमित सरकार की "मॉडर्न इंडिया 1885-1947" (1983) में उन्नीसवीं सदी के सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों का विवरण है। इसमें स्वामी दयानन्द और आर्य समाज पर भी अध्याय है परंतु शिक्षा के संदर्भ में विस्तार से चर्चा नहीं है।

डॉ. गजानन शर्मा की "हिंदू रिवाइवलिज्म इन नॉर्थ इंडिया" (1996) में उत्तर भारत के धार्मिक पुनरुत्थान आंदोलन का विश्लेषण है। इसमें स्वामी दयानन्द की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

प्रो. केनेथ जोन्स का "आर्य धर्म: हिंदू कॉन्शसनेस इन 19th सेंचुरी पंजाब" (1976) पंजाब में आर्य समाज के प्रभाव का अध्ययन है। इसमें शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज के कार्यों का उल्लेख है।

डॉ. लज्जाराम मेहता की "आर्य समाज का इतिहास" (1972) हिंदी में आर्य समाज पर एक प्रामाणिक कार्य है। इसमें स्वामी दयानन्द के शिक्षा संबंधी विचारों का विवरण है।

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि और ब्रिटिश शिक्षा नीति पर अलग-अलग अध्ययन तो हुए हैं परंतु दोनों के बीच व्यापक तुलनात्मक अध्ययन का अभाव है। यह शोध कार्य इस कमी को पूरा करने का प्रयास करेगा।

शोध उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती की वैदिक शिक्षा दृष्टि का विस्तृत विश्लेषण करना और उसके दार्शनिक आधार को समझना।
2. समकालीन ब्रिटिश शिक्षा नीति (1824-1883) के विकास, उद्देश्यों और कार्यान्वयन का अध्ययन करना।

3. स्वामी दयानन्द की वैदिक शिक्षा दृष्टि और ब्रिटिश शिक्षा नीति के बीच तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
4. दोनों शिक्षा दर्शनों के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आधार की पड़ताल करना।
5. इन दोनों दृष्टिकोणों के भारतीय समाज पर प्रभावों का मूल्यांकन करना।
6. स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि की व्यावहारिकता और सीमाओं का विश्लेषण करना।
7. ब्रिटिश शिक्षा नीति के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं की पहचान करना।
8. दोनों दृष्टिकोणों का भावी भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन करना।
9. समकालीन बौद्धिक वातावरण में इन शिक्षा दर्शनों की स्थिति का आकलन करना।
10. इस तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए महत्व निर्धारित करना।

शोध परिकल्पना:

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है:

1. स्वामी दयानन्द की वैदिक शिक्षा दृष्टि पूर्णतः भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित थी और इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति का संरक्षण और विकास था।
2. ब्रिटिश शिक्षा नीति का प्राथमिक उद्देश्य भारत में पश्चिमी सभ्यता का प्रसार और प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति था।
3. दोनों शिक्षा दर्शनों के बीच मौलिक वैचारिक संघर्ष था जो भाषा, पाठ्यक्रम, शिक्षा पद्धति और लक्ष्यों के स्तर पर दिखाई देता है।
4. स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि समकालीन सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल थी परंतु इसमें आधुनिकीकरण के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था।

5. ब्रिटिश शिक्षा नीति ने भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तो शुरू की परंतु इसके साथ-साथ सांस्कृतिक विछिन्नता भी लाई।
6. दोनों दृष्टिकोणों का भारतीय शिक्षा व्यवस्था के भावी विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा और आज भी इसके तत्व मौजूद हैं।
7. स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि में महिला शिक्षा और सामाजिक समानता के प्रगतिशील तत्व थे जो उस काल के लिए क्रांतिकारी थे।
8. ब्रिटिश शिक्षा नीति ने भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपराओं को हाशिए पर डाला जिसके दीर्घकालिक नकारात्मक परिणाम हुए।

शोध विधि:

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मुख्यतः ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। यह पद्धति वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक होगी।

प्राथमिक स्रोत:

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के मूल ग्रंथ - सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि।
2. स्वामी दयानन्द के पत्र और भाषण।
3. आर्य समाज के प्रारंभिक प्रकाशन और दस्तावेज।
4. ब्रिटिश सरकारी दस्तावेज - शिक्षा नीति संबंधी प्रस्ताव, रिपोर्ट और कानून।
5. समकालीन अख़बार और पत्रिकाएं।
6. मैकाले का मिनट ऑन एजुकेशन (1835)।
7. वुड्स एजुकेशन डिस्पैच (1854)।
8. समकालीन शिक्षाविदों के लेख और भाषण।

द्वितीयक स्रोत:

1. स्वामी दयानन्द और आर्य समाज पर लिखी गई जीवनियां और अध्ययन।
2. ब्रिटिश शिक्षा नीति पर शोध पुस्तकें।
3. उन्नीसवीं सदी के भारतीय इतिहास पर मानक ग्रंथ।
4. शिक्षा के इतिहास पर विशेषज्ञ अध्ययन।
5. समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध आलेख।

अनुसंधान तकनीक:

1. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का गहन अध्ययन और विश्लेषण।
2. तुलनात्मक विधि का प्रयोग करते हुए दोनों शिक्षा दर्शनों का विश्लेषण।
3. कालक्रमानुसार घटनाओं का अध्ययन।
4. सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में दोनों दृष्टिकोणों का मूल्यांकन।
5. आंकड़ों और तथ्यों का व्यवस्थित संकलन और प्रस्तुतीकरण।

संभावित अध्यायीकरण:

प्रस्तुत शोध प्रबंध को निम्नलिखित आठ अध्यायों में विभाजित किया जाएगा:

प्रथम अध्याय: भूमिका

- शोध समस्या का परिचय
- शोध के उद्देश्य और महत्व
- शोध पद्धति और स्रोत
- साहित्य समीक्षा
- अध्यायों का विवरण

द्वितीय अध्याय: उन्नीसवीं सदी का भारत: सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

- ब्रिटिश शासन की स्थापना और प्रभाव
- सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
- पूर्व-पश्चिम संघर्ष
- बौद्धिक जागरण की पृष्ठभूमि
- शिक्षा की तत्कालीन स्थिति

तृतीय अध्याय: स्वामी दयानन्द सरस्वती: जीवन और विचार

- प्रारंभिक जीवन और शिक्षा
- धार्मिक और दार्शनिक विकास
- आर्य समाज की स्थापना और सिद्धांत
- सामाजिक सुधार के प्रयास
- समकालीन व्यक्तित्वों से संपर्क

चतुर्थ अध्याय: स्वामी दयानन्द की वैदिक शिक्षा दृष्टि

- वैदिक ज्ञान परंपरा का महत्व
- शिक्षा के उद्देश्य और आदर्श
- गुरुकुल प्रणाली की वकालत
- पाठ्यक्रम और शिक्षण विधि
- स्त्री शिक्षा के विचार
- व्यावहारिक शिक्षा पर जोर

पंचम अध्याय: ब्रिटिश शिक्षा नीति का विकास (1824-1883)

- प्रारंभिक ब्रिटिश शिक्षा नीति
- पूर्वी-पश्चिमी शिक्षा विवाद
- मैकाले का शिक्षा मिनट (1835)
- वुड्स एजुकेशन डिस्पैच (1854)
- विश्वविद्यालयों की स्थापना
- शिक्षा का प्रसार और प्रभाव

षष्ठ अध्याय: दोनों शिक्षा दर्शनों का तुलनात्मक विश्लेषण

- शिक्षा के आधारभूत सिद्धांत
- भाषा और माध्यम की समस्या
- पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति
- शिक्षा के उद्देश्य और लक्ष्य
- सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव
- आर्थिक और राजनीतिक आयाम

सप्तम अध्याय: समकालीन प्रतिक्रियाएं और प्रभाव

- स्वामी दयानन्द की शिक्षा दृष्टि पर समकालीन मतभेद
- ब्रिटिश शिक्षा नीति की आलोचना और समर्थन
- आर्य समाज के शैक्षिक प्रयास
- डी.ए.वी. आंदोलन का विकास
- अन्य सुधारकों के विचार
- सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव

अष्टम अध्याय: निष्कर्ष और मूल्यांकन

- तुलनात्मक अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष
- दोनों दृष्टिकोणों की सफलताएं और सीमाएं
- भावी शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव
- आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता
- शोध के योगदान और भावी संभावनाएं

संदर्भ ग्रंथ सूची:

प्राथमिक स्रोत:

1. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *सत्यार्थ प्रकाश.* आर्य समाज, दिल्ली, 1875.
2. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका.* गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, 1878.
3. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *संस्कारविधि.* आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, 1877.
4. Macaulay, T.B. *Minute on Education*. Government of India, Calcutta, 1835.
5. Wood, Charles. *Education Despatch*. East India Company, London, 1854.
6. *Parliamentary Papers relating to East India (Education)*. British Parliament, 1852-1883.
7. *Annual Reports on Public Instruction in Bengal*. Government of Bengal, 1855-1883.

द्वितीयक स्रोत:

8. शारदा, हर बिलास. *दयानन्द सरस्वती: हिज लाइफ एंड वर्क.* अजमेर, 1946.
9. जॉर्डी, जे.टी.एफ. *दयानन्द सरस्वती: हिज लाइफ एंड आइडियाज.* दिल्ली, 1978.
10. यादव, के.सी. *आर्य समाज एंड एजुकेशन.* नई दिल्ली, 1987.
11. कॉप, डेविड. *ब्रिटिश ओरिएंटलिज्म एंड द बंगाल रेनेसांस.* कलकत्ता, 1969.
12. मैकेली, ब्रूस. *एजुकेशन एंड द ब्रिटिश राज.* दिल्ली, 1992.

13. बसु, अपर्णा. *एसेज ऑन हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन.* दिल्ली, 1982.

14. सरकार, सुमित. *मॉडर्न इंडिया 1885-1947*. दिल्ली, 1983.

15. शर्मा, गजानन. *हिंदू रिवाइवलिज्म इन नॉर्थ इंडिया.* दिल्ली, 1996.

16. जोन्स, केनेथ. *आर्य धर्म: हिंदू कॉन्शसनेस इन 19th सेंचुरी पंजाब.* बर्कले, 1976.

17. मेहता, लज्जाराम. *आर्य समाज का इतिहास.* दिल्ली, 1972.

18. रे, निहार रंजन. *दयानन्द एंड हिज मिशन.* कलकत्ता, 1965.

19. घोष, एस.सी. *द हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन मॉडर्न इंडिया.* कलकत्ता, 1970.

20. नुरुल्लाह, सैयद और नायक, जे.पी. *ए हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया.* बम्बई, 1974.

21. चंद्रा, बिपिन. *मॉडर्न इंडिया.* दिल्ली, 1971.

22. सेन, एस.एन. *एजुकेशन इन एंशिएंट एंड मीडीवल इंडिया.* दिल्ली, 1973.

23. रॉटरमुंड, डीटमार. *एन एकनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया.* दिल्ली, 1988.

24. स्टोक्स, एरिक. *द इंग्लिश यूटिलिटेरियन्स एंड इंडिया.* दिल्ली, 1989.

25. ट्रेवेल्यन, चार्ल्स. *ऑन द एजुकेशन ऑफ द पीपल ऑफ इंडिया.* लंदन, 1838.